भिण्डी की वैज्ञानिक खेती

भिंडी गर्मा व वषा के मौसम का प्रमुख फसल है। भिंडी का फलो से प्रोटीन, कैल्शियम तथा अन्य खनिज लवण मिलते ह। भिंडी के नियात द्वारा भी विदेशी मुद्रा प्राप्त का जा सकती है।

प्रमुख किस्म	
पूसा सावनी	यह प्रजाति बंसत, ग्रीष्म और वषा ऋतु पाई गयी है। पौधो का उँचाई 100-200 से.मी. होती है। फल गहरे हरे रंग लगभग 15 से.मी. होते है। इसका उपज 125-150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।
प्रभनी क्रांति	यह किस्म पीतशीरा(मोजेक) विषाणु बीमारी रोकने मे सक्षम पाई गयी है। इसके फल पूसा सावनी जैसे ही होता है। प्रथम तुडाई 55-60 पश्चात का जाती है। इसका औसतन पैदावार 8-10 टन प्रति हेक्टेयर होती है।
अका अनामिका	यह विषाणु रोग से प्रतिरोधी किस्म है। फल मध्यम हरे पाँच किनारो वाली किस्म है। लगाने के 50 दिनो बाद फुल आते है। तथा इसका उपज 125-150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।
वषा उपहार	पीतशीरा(मोजेक) विषाणु रोग प्रतिरोधी, 45 दिन बाद प्रथम तुडाई, 18-20 से.मी लम्बाई, पाँच धारियाँ औसत उपज 9 से 10 टन प्रति हेक्टेयर।
पूसा मखमली	हल्के हरे रंग कि किस्म है तथा पीतशीरा(मोजेक) विषाणु रोग के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। पाँच धारिया,ँ विशेष गुण एवं फल 12-15 से.मी. हल्के हरे पाँच किनारो वाली होती है। 8-10 8-10 टन प्रति हेक्टेयर औसतन पैदावार होती है।
अका अभय	पीतशीरा (मोजेक) विषाणु रोग प्रतिरोधी किस्म है। फल भेदक किट को सहन कर सकती है एवं पेडी फसल के लिए उपयुक्त है।
पूसा ए-**4**	फल मध्यम आकार के गहरे, कम लस वाले, 12-15 सेमी लंबे तथा आकषक होते है। इसका औसत पैदावार ग्रीष्म म 10 टन व खरीफ म 15 टन प्रति हेक्टेयर है।
पंजाब-**7,**	यह किस्म भी पीतरोग रोधी है। फल हरे एवं मध्यम आकार के होते है। बुआई के लगभग 55 दिन बाद फल आने शुरू हो जाते है। इसका पैदावार 8-12 टन प्रति है. है।
	अन्य वाइरस प्रतिरोधाी किस्म:- पंजाब-**8,** आजाद क्रांति**,** हिसार उन्नत

खेत का तैयारी :वषा ऋतु के समय पहली वषा होने पर खेत को मिटटी पलटने वाले हल से दो बार अच्छी तरह से जुताई करे। इसके पश्चात दो बार डिस्क हैरो या देसी हल से पुन: जुताई कर पाटा चलाये। 250 क्विंटल अच्छी सडी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से अंन्तिम जुताई से पहले फैला दे। ताकी मिटटी मे अच्छी तरह से मिल जाये। सिंचाई की सुविधा होने पर इस फसल को वषा ऋतु से 20-25 दिन पहले ही बुआई कर देनी चाहिए। ताकि बाजार भाव अच्छा मिल सके।

जलवायु :भिंडी गर्मा तथा खरीफ मौसम की मुख्य सब्जी फसल है। यह 40 स.ग्रे. से ज्यादा तापमान सहन नहीं कर सकती है। बीज जमाव के लिए उपयुक्त तापमान 17-20 स.ग्रे. है तथा पौधो की बढ़वार के लिए 35 स.ग्रे. तक का तापमान उपयुक्त है।

मिट्टी :दुमट व बलुई दुमट मिट्टी जिसका पी एच मान 6.0-6.8 हो और वह पोषक तत्व युक्त हो तथा सिंचाई की सुविधाा व जल निकास का अच्छा प्रबंधा होना चाहिए।

बीज की मात्रा :गर्मा के मौसम के लिए 20-22 कि.ग्रा. व खरीफ (वषा) के मौसम म 10-12 कि.ग्रा. /हैक्टर की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की बीजदर पयाप्त होती है।

बुवाई :बीज बुवाई हल की सहायता से या सीड ड्रिल के द्वारा गर्मियों म 45 स.मी. कतार से कतार के बीच की दुरी तथा 20 स.मी. पौध से पौध बीच की दुरी इसी प्रकार से वषा के मौसम म 60ग20 स.मी. की दूरी पर करं। बीज की गहराई लगभग 4.5 स.मी. रख।

बुवाई का समय : गर्मी के मौसम म 20 फरवरी से 15 माच तथा खरीफ (वषा के मौसम) म 25 जून से 10 जुलाई तक का समय बुवाई के लिए उपयुक्त है।

उवरक व खाद : बुवाई से पहले गोबर व अच्छी तरह गली-सड़ी कम्पोस्ट लगभग 20 से 25 टन प्रति हैक्टर मिट्टी म अच्छी तरह मिला द। नत्रजन 40 कि.ग्रा. की आधाी मात्रा, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस व 60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई के समय प्रयोग कर तथा बची हुई आधाी नत्रजन की मात्रा फसल म फूल आने की अवस्था म डाल।

सिंचाई: सिंचाई माच म 10-12 दिन, अप्रैल म 7-8 दिन और मई-जून म े 4-5 दिन क े अन्तर पर करे।ं बरसात मे यदि बराबर वषा होती है तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पडती है ।

निराई व गुडाई: नियमित निंदाई-गुडाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बोने के 15-20 दिन बाद प्रथम निंदाई-गुडाई करना जरूरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु रासायनिक नींदानाशकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। खरपतवारनाशी फ्ल्यूक्लरेलिन की े 1.0 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टर की दर से पयाप्त नम खेत म बीज बोने के पूवं मिलाने से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

तुड़ाई व उपज :भिंडी की फलियों को उनकी अपरिपक्व अवस्था म फूल खिलने से 3-4 दिन बाद 3 दिन के अंतराल पर लगातार तोड़ते रह। भिंडी की फली की उपज गर्मी की फसल म 90-100 क्विंटल तथा वषा के मौसम म 150 से 175 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से मिलती है।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण: मोजैक तथा पण कुंचन (मोजैक एड लीफ कल) **नियंत्रण** : कन्फीडोर 200 एस एल (2.0 मि.ली. प्रति 1.0 लीटर पानी की दर से) रोपाई के 20 दिन बाद तथा आवश्यकतानुसार 15 दिन के अंतराल पर प्रयोग कर।

कीट प्रकोप एवं प्रबंधान: सफेद मक्खी- पत्तियों का रस चूसने से पत्तियां सिकुड़ जाती ह। कन्फीडोर या डेसिस का 0.3 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी म मिलाकर छिड़काव कर।

फली तथा तना छेदक- कीड़ा फलियों म छेद कर अंदर बीज को हानि पहुंचाता है तथा फली खाने योग्य नहीं होती है। पौधो की अंतिम शिरा म छेद कर पौधो का ऊपरी हिस्सा मुरझा जाता है। कन्फीडोर या डेसिस का 0.3 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी म मिलाकर छिड़काव कर।

जैसिड: किट पत्तियों का रस चूस लेता है जिससे पत्तियां किनारों पर ऊपर की तरफ मुड़ जाती ह तथा पत्तियों का रंग पीला हो जाता है जो बाद म सूख जाती ह। कन्फीडोर या डेसिस का 0.3 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी म मिलाकर छिड़काव कर।